प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में लोच (नम्यता) का विकास – प्रत्यय, विशेषताएँ व अध्यापक की भूमिका

नीलू ढल*
सुषमा शर्मा**

प्राथमिक शिक्षा राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली का प्रथम एवं आधारभूत सोपान है। इस समय बच्चों की सफलताओं एवं उपलब्धियों की बुनियाद रखी जाती है और उनके भविष्य का निर्धारण किया जाता है। घर से बाहर विद्यालय में शिक्षक ही बच्चे को स्थिर भावात्मक संबंध देते हैं। स्कूल में जिस प्रकार का अनुभव और वातावरण उसे मिलता है वह बच्चों के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाता है। प्राथमिक चरण पर बच्चे माता-पिता के बाद अध्यापक को ही आदर्श मानते हैं। अध्यापक ही उचित शिक्षा व्यवस्था द्वारा बच्चों में अन्तर्निहित क्षमताओं को अग्रसित कर सकते हैं और उन्हें उचित दिशा भी प्रदान कर सकते हैं। आज के परिवेश में अध्यापन कला के साथ-साथ छात्रों को जीवन की विषमताओं से सफलतापूर्वक निपटने में निपुण बनाने का कार्य शिक्षक का उत्तरदायित्व है और शिक्षक के ये कार्य विशेष तौर पर प्राथमिक स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तावना

अनन्तकाल से मानव अपने आपको तथा अपने साथियों को समझने का प्रयास करता आ रहा है। उसकी यह कोशिश रही है कि वह मानव व्यवहार की भविष्यवाणी कर सके। मानव एक जटिल प्राणी है और जटिलता का एक कारण यह भी है कि स्वभाव से वह उस समाज का सदस्य है जो निरंतर परिवर्तनशील है। घर में, स्कूल में, कार्यक्षेत्र में, सामाजिक उत्सवों में और अनेक परिस्थितियों में वह अन्य व्यक्तियों के संपर्क में आता है। विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के संपर्क में आने पर वह अपने व्यवहार में उपयुक्त परिवर्तन करता है। सभी परिस्थितियों में व्यवहार व्यक्ति की पृष्ठभूमि, क्षमताएँ, अभिवृत्तियों और

* *सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, श्रीमती इन्दिरा देवी शिक्षा कॉलेज, रादौर, यमुनानगर
** *प्रोफ़ेसर (आचार्य)*, शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

भावात्मक स्थिरता से नियंत्रित होता है। ज्ञान का भंडार तेजी से बढ़ रहा है। आज सूचना और प्रौद्योगिकी का युग है। आज हमें बच्चों को क्या सीखाना है, इसकी धारणा का भी विस्तार हुआ है। अब शिक्षक केवल विषय ज्ञान सिखाकर ही संतुष्ट नहीं हो सकते, अपितु अन्य पक्षों जैसे विभिन्न कौशलों, आदतों और अभिवृत्तियों आदि पर भी ध्यान देना आवश्यक है। इन सभी कौशलों का विकास शिक्षक विद्यार्थियों के प्राथमिक वर्षों में ही करा सकता है क्योंकि विद्यार्थी के जीवन में प्रथम कुछ वर्ष अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं, इन्ही वर्षों में उसके विश्वास की बुनियाद पड़ती है। शिशु जो जन्म से अपरिपक्व होता है और वयस्कों पर आश्रित रहता है, बढ़कर धीरे-धीरे सक्षम व्यक्ति बनता है। पहले पाँच वर्षों में वह अपने शरीर पर नियंत्रण करना सीखता है व उसमें गामक कौशल विकसित होते हैं।

बच्चों का सबसे पहला विद्यालय उसका घर है और घर के बाकी सभी पहलुओं का उसके जीवन पर अधिक प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक संवेगों को बढ़ाने के लिए माता-पिता अथवा पारिवारिक सदस्यों का स्नेह व सकारात्मक पर्यावरण केवल उसको घर से ही मिलता है। घर के स्नेहमयी वातावरण से निकल कर बच्चा जब विद्यालय में पहला कदम रखता है तो बिलकुल नई परिस्थितियों का सामना करता है। स्कूल में वह प्रतिकूल और अरुचि की भावना को लेकर आता है। वह स्कूल को माँ के स्नेह से वंचित होना मानता है। बच्चे में असुरक्षा की भावना, स्नेह का अभाव, उसके व्यवहार से ही प्रतिबिम्बित होता है।

शिक्षक ही केवल उसे घर के बाहर स्थिर भावात्मक संबंध देता है। अध्यापक उस समय एक संरक्षक का कार्य करता है जो उसे स्नेहपूर्ण आधार देता है, और समाज में रहकर समायोजन करने का ज्ञान भी सिखाता है। अध्यापक ही आंतरिक क्षमताओं का निर्माण एवं तनाव से बाहर निकलने का कौशल सिखाता है। उसका आचरण संवेगों के साथ-साथ उसकी आवश्यकताओं और उसके भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक पर्यावरण द्वारा प्रभावित होता है। इसलिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि अध्ययन कला के साथ-साथ विद्यार्थियों में संवेगों की प्रकृति और विकास तथा संवेगों को नियंत्रित करके बच्चों को तनाव के समय विभिन्न क्रियाओं में अग्रसर करना लोच निर्माण कहलाता है। निरंतर परिवर्तनशील व क्रियाशील क्षमताओं का विकास कर विभिन्न क्रियाकलापों में संलग्न कर सकना ही लोच कहलाती है।

लोचदार (नम्य) बच्चों की विशेषताएँ

लोचदार बच्चे आशावादी होते हैं (कारवर और सेडिलर 1987; लेजरस और फोकमेंम 1984) । लोचदार बच्चों में आत्मविश्वास होता है। यह बच्चे हर मुश्किल परिस्थितियों से स्वयं को आसानी से निकाल सकते हैं। वे सामाजिक और प्रशासनिक गुणों से युक्त होते हैं। सबके प्रति उनका रवैया मैत्रीपूर्ण होता है और वे जीवन के प्रति सकारात्मक होते हैं। ऐसे बच्चे दृढ़ निश्चय वाले होते हैं व इनमें हर कार्य के प्रति उत्सुकता का भाव होता है। नेतृत्व व सृजनात्मकता के गुण इन बच्चों में साफ झलकते हैं। समस्याओं को पहचानना व उनका समाधान करना ही लोचदार बच्चों के लक्षण होते हैं। ये जीवन की चुनौतियों को आत्म प्रोत्साहन व चुनौती के रूप में लेते हैं।

प्राथमिक स्तर का महत्व

प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का प्रथम चरण है जब जीवन की आधारशिला रखी जाती है। यहाँ से बच्चों को भावी जीवन के निर्माण के लिए ठोस आधार मिलता है। प्राथमिक शिक्षा किसी भी देश के विकास की नींव होती है। विद्यार्थियों में शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक विकास, व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ, सार्वभौमिक बंधुत्व का विकास, लाभदायक प्रतिक्रियाओं तथा अनुभवों द्वारा जीवन के लिए तैयार करना ही प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य हैं। प्राथमिक शिक्षा वह स्तर है जिसमें मुख्यतय: आधारभूत कौशलों के विकास के लिए शिक्षण दिया जाता है और उन सामाजिक अभिवृत्तियों पर भी बल दिया जाता है जो जनतांत्रिक जीवन के लिए आवश्यक हैं। पहली से पाँचवीं कक्षा तक का शिक्षण प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत आता है। यह वह समय है जब विद्यार्थियों की बाह्य व आंतरिक संरचना में परिवर्तन आते हैं व विकास की गति तीव्र होती है।

प्रत्येक बच्चा स्वभाविक क्षमताओं से युक्त होता है और अध्यापक अपने प्रयास द्वारा बच्चों में अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित कर बाह्य रूप दे सकते हैं। सर्वोतम गुण बाहर ला सकते हैं। विद्यालय में दिए गए अनुभव और वातावरण उसके सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। शिक्षक के यह कार्य विशेषकर प्राथमिक स्तर पर अधिक महत्वपूर्ण हैं।

प्राथमिक स्तर पर लोच (नम्यता) विकास में अध्यापक की भूमिका

शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है विशेषकर प्राथमिक वर्षो में क्योंकि उस समय बच्चा कच्चे घड़े के समान है, जिसे जिस रूप में ढालना चाहे ढाल सकते हैं। अध्यापक को बच्चे के जीवन में संवेगों और संवेगों की अभिव्यक्ति का महत्व समझाया जा सकता है जिसे समझाकर वह बच्चों के संवेगों को महत्त्वपूर्ण प्रेरक बनाकर उपयोगी कार्यक्षेत्र में मोड़ सकता है।

आंतरिक व मानसिक रूप से मज़बूत बनाने के लिए अध्यापक के कार्य

1. **शरीर को तनाव मुक्त करके**-छुपी हुई संवेगात्मक शक्ति को विकसित करने के लिए शिक्षक को ऐसे कार्यक्रम जैसे खेल, क्रीड़ा आदि आयोजित करने चाहिए जिनमें बच्चे अपनी रुचियों के आधार पर भाग ले सकें और कुंठाओं से मुक्ति पा सकें। शारीरिक श्रम वाले खेलों द्वारा, रुचिकर कहानियों द्वारा नाटकों में भाग लेकर, चर्चा कर या जिन कार्यों में बच्चों की रुचि है व्यवस्था करके बच्चों को तनावमुक्त किया जा सकता है। परिपक्व और प्रतिष्ठित व्यवहार द्वारा तथा कक्षा का वातावरण सदैव सुखद बनाकर अध्यापक बच्चों को तनाव मुक्त रख सकते हैं।
2. **रुचियों का विकास करके**-विद्यार्थियों को निर्देशन देकर तथा आकर्षक पाठ्यसामग्री प्रदान करके अध्यापक उनमें स्वस्थ पठन रुचि विकसित कर सकते हैं जिससे उनमें पठन कौशल का विकास हो।
3. **रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र में अभिरुचि**-बाल सभा, संगीत, नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नौटंकी, कठपुतली, मेले, कबड्डी, खो-खो में भाग लेकर अपने

विभिन्न कौशलों का विकास कर सकते हैं तथा परस्पर संबंध भी विकसित कर सकते हैं।

4. **आत्म संकल्पना** (Self concept) **का विकास**–स्वस्थ आत्म संकल्पना के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कारक बच्चे को स्वीकार करना है। प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता है कि शिक्षक समय-समय पर उसकी प्रशंसा करे तथा उसकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को जानकर उसका उचित सम्मान करे।
5. **आत्म मूल्यांकन** (Self appraisal)– अध्यापक विद्यार्थी को ऐसे अवसर प्रदान कर सकते हैं जिनमें वे अपनी क्षमताओं का निर्माण कर सकें और शिक्षक की सहायता से अपने कार्य का आंकलन कर सकें।
6. **दूसरों से तुलना**–स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित कर अध्यापक बच्चों में तनाव को कम कर सकते हैं और लोच का विकास कर सकते हैं।
7. **सामूहिक जीवन**–अध्यापक विद्यार्थियों को समूह का सदस्य बनने में मदद करें ताकि वह एक दूसरे के साथ व्यवहार का अवलोकन कर सकें तथा ऐसे बच्चों की मदद कर सकें जो दूसरों द्वारा स्वीकार नहीं किए जाते या दूसरों को स्वीकार नहीं कर पाते, के व्यवहार में परिवर्तन कर लोचशीलता को विकसित कर सकते हैं।
8. **मूल्यों का निर्माण**–रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा तथा विभिन्न मान्य व्यक्तियों की तस्वीरें प्रस्तुत करके, ऐसी कहानियाँ जिनमें अच्छाई पुरस्कृत और बुराई दंडित होती है, अध्यापक विद्यार्थियों में लोच का विकास कर सकते हैं।
9. **स्नेह के प्रति आश्वस्त अनुभवों द्वारा**–अध्यापक और अन्य वयस्कों के द्वारा सुरक्षा, सहायता और निर्देशन प्रदान करने से उनकी स्वयं सत्यनिष्ठा विकसित होगी और वे भरोसे योग्य बनेंगे।
10. **टोलियों का निर्माण**–कक्षा द्वारा मनोरंजन कार्यक्रम आयोजन करके, दायित्व देकर और विभिन्न परिस्थितियों में नेतृत्व लेना, विद्यार्थियों में स्वयं पर नियंत्रण में प्रवीणता प्रदान करना सिखा सकता है।
11. **सृजनात्मक कार्य और समस्या समाधान**–अध्यापक बच्चों को विभिन्न त्योहारों पर जैसे ईद, दिवाली, क्रिसमस पर अपनी सृजनात्मकता को प्रदर्शन करने के अवसर प्रदान करके व प्रयोजन कार्य द्वारा समस्याओं का हल निकालने का कौशल सिखा सकता है।
12. **संवेगों का निकास और रोल प्लेइंग**–दौड़ने, चिल्लाने और शारीरिक कसरत द्वारा कुछ सीमा तक तनाव के निकास में मदद मिलती है। खेल संवेगात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक से अधिक प्रत्यक्ष अवसर प्रदान करता है। नाटक के खेल में विभिन्न भूमिकाओं को अपनाने का और विभिन्न संवेगों को फिर से अनुभव करने के अवसर मिलते हैं। अध्यापक संगठित खेलों द्वारा या किसी क्लब का सदस्य बनाकर विद्यार्थियों में लोच को बढ़ावा दे सकते हैं।

हार्ट मास्टर्स जो कि फुलर बेलहाउस और जॉनस्न 2001 ने विकसित किया था और जिसका प्रयोग उन्होंने प्राथमिक विद्यालयों में किया था, के अनुसार स्कूल में अध्यापक के द्वारा क्लबों

(Houses) को 4 भागों में विभाजित कर बच्चों में लोच निर्माण कर सकते हैं।

(i) पार्टी क्लब
इस सत्र से अध्यापक मित्रता और सहयोग की भावना विकसित करा सकता है।

(ii) हार्ट मास्टर
हार्ट मास्टर के द्वारा अध्यापक इच्छाओं और भावनाओं को समझना सीखा सकता है।

(iii) माइंड मास्टर
माइंड मास्टर के द्वारा अध्यापक बाहरी और आंतरिक वार्तालाप करना सिखा सकता है।

(iv) पीस मेकर
पीस मेकर के द्वारा अध्यापक बच्चों में सामाजिक परिपक्वता को बढ़ावा दे सकता है।

(v) शिक्षा में खेल का स्थान
पहेलियाँ, क्विज (quiz), कॉमिक मॉडल बनाना, भ्रमण आदि द्वारा विद्यार्थियों की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। ऐसे क्रियाकलापों में बच्चे अपनी मर्ज़ी से कार्य करते हैं और आनन्द लेते हैं और उपयोगी आचरण भी सीखते हैं।

13. अध्यापक द्वारा लोच को बढ़ावा देने वाली रचनात्मक प्रक्रियाएँ (कारक)

उच्च बौद्धिक क्षमता–अध्यापक विद्यार्थियों में उच्च बौद्धिक क्षमता का विकास, संबंधों में विश्वसनीयता और सहयोगी माता-पिता के सहयोग द्वारा कर सकता है।

आत्मसम्मान की भावना

माता-पिता, शिक्षक व अन्य वयस्कों के साथ स्नेहपूर्ण संबंधों के द्वारा विद्यार्थियों में आत्मसम्मान की भावना एवं परिपक्वता को विकसित किया जा सकता है।

समस्या-समाधान कौशल

तर्कशक्ति व सकारात्मक आदर्श द्वारा अध्यापक समस्या-समाधान कौशल का विकास कर सकता है।

नवीनतम, सृजनात्मक एवं संसाधनात्मक व्यक्तित्व

सृजनात्मकता के विकास के लिए स्वतंत्र चिन्तन और स्वतंत्र निर्णय पर बल देना चाहिए। हास्य और विनोद का सृजनात्मकता से घनिष्ठ संबंध है। विनोद से प्रभुदित और तनावमुक्त वातावरण का सृजन होता है। यदि शिक्षक इसके बारे में सोचेगा तो वह विद्यार्थियों में डाइवर्जेंट चिन्तन, कल्पनाशीलता एवं उत्सुकता को प्रेरित कर सकता है।

निष्कर्ष

शिक्षक के कार्य बहुत महत्वपूर्ण हैं, और उनका जो प्रभाव बच्चों पर पड़ता है उससे उनका उत्तरदायित्व काफ़ी बढ़ जाता है। आज के परिवेश में अध्यापन कला के साथ-साथ अन्य पक्षों जैसे– विभिन्न कौशलों, आदतों और अभिवृत्तियों आदि पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

अध्यापक अपने प्रयास द्वारा बच्चों में अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित कर बाह्य

रूप दे सकते हैं और सर्वोत्तम गुण बाहर ला सकते हैं। अध्यापक अलग-अलग विधियों एवं तकनीकों से बच्चों में लोचशीलता (नम्यता) विकसित कर सकता है ताकि वे भावी जीवन में कुंठाओं और विषमताओं से डटकर मुकाबला कर सकें।

संदर्भ

के., लता. 1985. *इम्पेक्ट ऑफ़ पेरेन्टल एटीट्यूड ऑन सोशल, इमोशनल एंड एडजस्टमेन्ट ऑफ़ नॉर्मल एंड हेंडीकेप्ड स्टूडेन्ट्स*, पीएच.डी. थिसिस(एजुकेशन), उत्कल यूनिवर्सिटी

गोलमेन, डी. 1995. *इमोशनल इन्टेलिजेन्स – वाई इट कैन मैटर मोर देन आई. क्यू*, न्यूयार्क – बेन्टम बुक्स.

जिम्मेरमेन, एम. एंड ए. कुमार. 1994. रेजिलेन्सी– रिसर्च इम्पलिकेशन फॉर स्कूल एंड पॉलिसि, *सोशल पॉलिसी रिपोर्ट*, वाल्यू. 3, नं. 4.

नैज़ल एण्ड ग्रैबेल. 2005. *ट्रान्जिशन कम्पिटेन्स एंड रेजिलेन्सी इन एजुकेशनल इंस्टीट्यूट*, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ़ ट्रान्जिशन्स इन चाइल्डहुड, वाल्यूम 1, पेज 4-11

मेयर, जे.डी एंड पी. सलोवे. 1993. *दि इन्टेलिजेन्सी ऑफ इमोशनल इन्टेलिजेन्स, इन्टेलिजेन्स*, 17, 433-442

बैल, पी. 1990. *पेरेन्ट्स ऑफ़ हीयरिंग इम्पेयर्ड*– कम्यूनिकेशन, स्ट्रेस एंड सोशल सपोर्ट, पीएच.डी. थिसिस, डिजर्टेशन एब्स्ट्रेक्ट इन्टरनेशनल, वाल्यूम. 51, न. 9, मार्च 1991

यूंग, एम.एच. 1994. पेरेन्टिंग स्टाइल एंड चाइल्ड बिहेवियर प्रॉब्लम. ए लॉगट्यूडाइनल एनालिसिस, *डिजर्टेशनएब्स्ट्रेक्ट इन्टरनेशनल*, वॉल्यूम 54(8), 3225-A

सिन्हा, जे.सी. 1987. रोल ऑफ़ दि फ़ेमिली एज ए यूनिट एंड वोकेशनल लीट्रेट्स ऑफ द इन्टरमीडीएट स्टूडेन्ट्स, *एम.बी. बुच थर्ड सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*, न्यू देहली एन.सी.ई.आर.टी., मार्च 1987.